पंजाब

→ गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर ने सिखों को संगठित किया था।

→ बन्दा बहादुर की मृत्यु के बाद सिख 12 मिसलों में विभाजित हो गये थे।

→ रणजीतसिंह सुकरचकिया मिसल का था। Imp

→ अफगानिस्तान के राजा जमान शाह ने 1799 में रणजीतसिंह को लाहौर का राजा बना दिया था।
(चिनाब में जमान शाह की फंसी हुई तोपें वापस देने के कारण जमान शाह ने खुश होकर राजा बनाया था)

→ 1805 में रणजीत सिंह ने अमृतसर पर अधिकार कर लिया।

→ **अमृतसर की सन्धि : (1809)**

रणजीत सिंह तथा अंग्रेजों के बीच
↓
उस समय गवर्नर जनरल लॉर्ड मिन्टो प्रथम

→ इस सन्धि में अंग्रेजों का प्रतिनिधि चार्ल्स मैटकॉफ था।

सन्धि के प्रावधान :

(1) इस सन्धि द्वारा सतलज नदी को रणजीत सिंह तथा ब्रिटिश साम्राज्य के बीच सीमा बना दिया गया।

सन्धि का महत्व !

1. इस सन्धि द्वारा पहली बार अंग्रेजो के रणजीत सिंह के साथ सम्बन्ध स्थापित किये। (नेपोलियन के डर के कारण)
2. अंग्रेजो पर नेपोलियन का खतरा टल गया।
3. रणजीत सिंह का एकीकृत सिख राज्य बनाने का सपना टूट गया।
4. रणजीतसिंह को सतलज नदी के दक्षिण-पश्चिम में विस्तार का पूरा मौका मिला। इसी वजह से उसने
   - 1818 में मुल्तान
   - 1819 में कश्मीर
   - 1834 में पेशावर

   पर अधिकार कर लिया।
5. इस सन्धि द्वारा रणजीत सिंह, अंग्रेजों का दब्बू मित्र बन गया था।
6. इस सन्धि के कारण अगले 3 दशकों तक पंजाब में शान्ति बनी रही।

→ 1809 में अफगानिस्तान का शहजादा शाह शुजा, रणजीतसिंह से सहायता मांगता है तथा उसे कोहिनूर हीरा भेंट करता है। लेकिन रणजीत सिंह ने सहायता नहीं की।

→ अंग्रेजो ने शाह शुजा को पेंशन देकर लुधियाना में रख लिया।

shriramedu.com श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर

→ 1838 में त्रिगुट का निर्माण किया गया। तथा इसमें शाह शुजा, कम्पनी, रणजीत सिंह थे। (प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध से पहले)

→ 1839 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गई।

→ रणजीत सिंह खालसा के नाम से शासन करता था।

→ रणजीत सिंह ने गुरु नानक तथा गुरु गोविन्द सिंह नाम के सिक्के चलाये थे।

→ रणजीत सिंह धर्म सहिष्णु शासक था।

→ वह सूफी संतो का आदर करता था।

इसके वित्त मंत्री दीनानाथ तथा विदेश मंत्री अजीजुद्दीन था।

रणजीत सिंह ने अपने प्रशासन में अनेक यूरोपीयन को शामिल किया था।

वन्तूरा - पैदल सेना प्रमुख

अलार्ड - घुड़सवार सेना प्रमुख

कोर्ट/गार्डनर - तोपखाना प्रमुख (इलाहीबख्श भी तोपखाने का प्रमुख था)

एविटेबल - पेशावर का प्रशासक

→ इसकी सेना एशिया की 2nd सबसे शक्तिशाली सेना थी।

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर shriramedu.com

रणजीत सिंह के उत्तराधिकारी

→ खड़ग सिंह

→ नौनिहाल सिंह

→ शेर सिंह

→ दलीप सिंह

→ प्रथम आंग्ल- सिख युद्ध (1845-46)

इस युद्ध में प्रमुख लड़ाईयाँ

मुदकी

फिरोजशाह

अलीवाल

बद्दोवाल

सबराओ का युद्ध :

→ इसमें सिखों की निर्णायक हार हुई। अंग्रेजो ने युद्ध जीत लिया

लाहौर की सन्धि : (9 मार्च 1846)

→ दलीप सिंह को राजा मान लिया गया।

→ रानी जिन्दा को संरक्षिका बना दिया गया।

→ लाल सिंह को वजीर बना दिया गया।

→ हेनरी लॉरेन्स को रेजीडेन्ट बना दिया गया।

→ 1.5 करोड़ ₹ युद्ध हर्जाना लगाया गया।

→ सिखों की सेना को सीमित कर दी गई।
(20,000 पैदल, 12000 घुड़सवार ही सेना में होंगे)

कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर shriramedu.com

11 मार्च 1846 को पूरक सन्धि की गई तथा कहा गया कि इस वर्ष के अन्त तक अंग्रेजी सेना लाहौर में रहेगी।

भैरोंवाल की सन्धि (22 दिसम्बर 1846)

→ जब तक दलीप सिंह वयस्क नहीं हो जाता है तब तक अंग्रेजी सेना लाहौर में रहेगी।

→ रानी जिंदा को शेखपुरा भेज दिया गया (पेंशन देकर)

इस युद्ध के समय अंग्रेजों का गवर्नर जनरल लॉर्ड हॉर्डिंग प्रथम था।

(2.) द्वितीय आंग्ल- सिख युद्ध : (1848 - 1849)

कारण : मुल्तान के गवर्नर - मूलराज } ने विद्रोह कर दिया था।
हजारा के गवर्नर - चतर सिंह }

→ डलहौजी ने गफ़ के नेतृत्व में पंजाब पर आक्रमण कर दिया।

प्रमुख युद्ध

चिलियानवाला का युद्ध

यह अनिर्णायक युद्ध था

डलहौजी ने गफ को हटाकर नेपियर को पंजाब भेजा।

गुजरात का युद्ध (पंजाब) था तोपों का युद्ध

इस युद्ध में सिखों की निर्णायक हार हुई।

डलहौजी ने पंजाब को अंग्रेजी सम्राज्य में विलय कर लिया।

हेनेरी लॉरेन्स ने इस विलय के विरोध में अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

अंग्रेजो ने कोहिनूर हीरा ले लिया तथा दलीप सिंह को पेंशन देकर लंदन पढ़ने के लिए भेज दिया। दलीप सिंह वहां जाकर ईसाई बन गया था।

श्रीराम कॉम्पिटिशन क्लासेज प्रा.लि. सीकर shriramedu.com